भारत में किसान आंदोलन और उसके नेता

व्रज कुमार पांडेय
अनीश अंकुर

भारत में किसान आन्दोलन
और उसके नेता

भारत में किसान आन्दोलन
और उसके नेता

प्रोफेसर (डॉ.) व्रज कुमार पांडेय
अनीश अंकुर

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-93-95380-13-3

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-45506552, 7291920186, 9350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण

राधेश्याम

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

BHARAT MEIN KISAN ANDOLAN AUR USKE NETA
by Prof. (Dr.) Braj Kumar Pandey & Anish Ankur

समर्पण

हिन्दी क्षेत्र के असाधारण व दुर्लभ वक्ता,
लखनऊ विश्विद्यालय छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष
तथा वर्तमान में
'अखिल भारतीय किसान सभा' के राष्ट्रीय महासचिव
अतुल कुमार अंजान
को
सादर।

अनुक्रम

भूमिका 9

1. जो जीवन की धूल चाटकर बड़ा हुआ है 12
2. किसान संघर्ष का इतिहास–एक संक्षिप्त परिचय 13
3. अँग्रेजी शासन के प्रारम्भिक–कालखंड में किसान आन्दोलन 22
4. गाँधी का चम्पारण सत्याग्रह 33
5. स्वामी सहजानन्द सरस्वती और किसान 44
6. प्रेमचन्द और किसान : कल और आज 50
7. सरदार वल्लभभाई पटेल का बारदोली सत्याग्रह 74
8. महापंडित राहुल सांकृत्यायन का अमवारी सत्याग्रह 81
9. पं. कार्यानन्द शर्मा : भारतीय मुक्ति संग्राम और किसान आन्दोलन के अथक योद्धा 92
10. बिहार के गया क्षेत्र के अविस्मरणीय किसान संघर्ष और पं. यदुनन्दन शर्मा 104
11. बंगाल का तेभागा किसान आन्दोलन 113
12. आचार्य विनोबा भावे का भूदान यज्ञ आन्दोलन 124

परिशिष्ट

कृषि बिगाड़ के तीन कानून 131

भूमिका

भारत की धरती पर चल रहे किसान आन्दोलन ने दुनिया में एक इतिहास रच डाला है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र में सबसे लम्बे समय तक चलने वाला यह अकेला आन्दोलन है। फिर भी सरकार में बैठे शीर्ष नेताओं को इसकी जरा भी परवाह नहीं है।

इस किसान आन्दोलन पर गहराई से विमर्श करने के मकसद से, सामाजिक सरोकारों से गहरे रूप से जुड़े लेखक डॉ. व्रज कुमार पांडेय ने इस किताब को प्रकाशित करने की योजना को अमली जामा पहनाया है। आपने आजादी से पूर्व और पश्चात के किसानों की हालत पर संजीदगी से विचार करते हुए, उसे पुस्तक के रूप में सामने लाने की कोशिश की है।

केन्द्र सरकार ने तीन काले कृषि कानूनों को समाप्त करने के बजाय, उन्हें कृषक हितैषी बताने के लिए, विज्ञापन और प्रचारात्मक अभियानों पर भारी धनराशि पानी की तरह बहाया है। फिर भी किसानों को यह नहीं समझा सकी कि यह कानून कैसे किसानों के लिए लाभदायी है। हम इसे सरकार की नाकामी ही समझते हैं।

भारत सरकार अपनी हठधर्मिता छोड़कर कृषि विशेषज्ञों, खेती-किसानी के जानकार सांसदों, मन्त्रियों, कृषि विश्वविद्यालयों के शिक्षकों, समाज-सेवियों आदि की एक समिति गठित करती, उसकी सलाह लेती। वैसे तो सरकार ने आन्दोलनकारी किसानों के बीच करीब दर्जन-भर वार्ताएँ की, लेकिन आन्दोलन खत्म कराने में कामयाब नहीं हो सकी।

हमारी कृषि घाटे का सौदा हो गयी है। किसान, कृषि छोड़ने पर विवश हो रहे हैं। किसानों का लागत मूल्य भी नहीं निकल रहा है। वैसे में सिर्फ कृषि पर निर्भर रहने वाले किसानों की हालत अत्यन्त दयनीय है। वे गरीबी, फटेहाली में जीने को विवश हैं। नतीजतन हर साल लाखों कृषक, मजदूर में तब्दील हो रहे हैं और रोजगार की तलाश में दर-दर भटक रहे हैं। इन किसानों के बेटे-